शैक्षिक एवं व्यावसायिक पृष्ठभूमि में सामाजिक गतिशीलता व सामाजिक संस्तरण के अन्तःसम्बन्ध की विवेचना

अनामिका सिंह*

सामाजिक गतिशीलता वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत नवीन सांस्कृतिक उद्देश्यों, मूल्यों एवं तत्वों को सामाजिक प्रस्थिति के उच्च बनाने वाले वांछनीय पक्षों के रूप में स्वीकारा जाता है अथवा स्थापित उद्देश्यों, मूल्यों एवं तत्वों को नवीन संदर्भ देकर पुनः परिभाषित किया जाता है। संक्षेप में सामाजिक गतिशीलता वह उच्च अथवा निम्न बदलाव है, जो सामाजिक स्तरीकरण व्यवस्था के अन्तर्गत एक सामाजिक स्तर से दूसरे सामाजिक स्तर की तरफ होता है जिसका कि व्यक्ति भाग हैं।

सामाजिक गतिशीलता का अभिप्राय एक सामाजिक प्रस्थिति से दूसरी सामाजिक प्रस्थिति की तरफ हुआ बदलाव अथवा परिवर्तन है। ये सामाजिक प्रस्थितियाँ आर्थिक, व्यावसायिक, आय इत्यादि सन्दर्भों से सम्बद्ध है। अतः जब सामाजिक गतिशीलता अस्तित्व में आती है तो सामाजिक क्षेत्र के अन्तर्गत बदलाव उत्पन्न होता है। सामाजिक गतिशीलता सदैव दूसरे व्यक्तियों अथवा समूहों के संदर्भ में होती है। अतः एक व्यक्ति को जो सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त है वह सदैव अन्य व्यक्तियों अथवा समूहों की सामाजिक प्रस्थिति से सम्बद्ध है।

सामाजिक गतिशीलता का सामाजिक स्तरीकरण से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी समाज में अनेक स्तर हैं जो एक अवधि के उपरान्त परिवर्तित हो जाते हैं। भूमि के स्वामी विभिन्न औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के स्वामी बन सकते हैं। जब एक व्यक्ति अथवा समूह अपनी प्रस्थिति को इस रूप में परिवर्तित करता है कि वह बदलाव समान सामाजिक स्थिति ही उत्पन्न करे तो उसे क्षैतिज गतिशीलता कहते हैं। इस स्थिति में आय, जीवन स्तर, विशेषाधिकार, व्यवसाय एवं कर्तव्यों में कोई बदलाव नहीं होता, अर्थात् पूर्व जैसी स्थिति ही बनी रहती है। क्षैतिज प्रस्थिति में बदलाव समान स्तर के व्यक्तियों में मात्र सीमांत विभेद उत्पन्न करता है। समाज की प्रकृति में यह तत्व अन्तर्निहित है कि वह अपनी स्तरीकरण व्यवस्था में लम्बवत् गतिशीलता उत्पन्न करे। कुछ व्यक्ति समृद्ध हो जाते हैं जबकि कुछ निर्धन हो जाते हैं। कुछ व्यक्ति पदोन्नति अर्जित करने में सक्षम होते हैं जबकि कुछ की पदावनति हो जाती है। कुछ व्यवसाय समाज में प्रतिष्ठित बन जाते हैं एवं समाज में उच्च प्रस्थिति तथा विशेषाधिकार अर्जित कर लेते हैं। व्यवसाय एवं पेशों की प्रस्थिति के मूल्यांकन के मापन में अनवरत परिवर्तन आधुनिक समाजों में देखा जा सकता है। जब प्रस्थिति मूल्यांकन का आधार ही परिवर्तित हो जाता है तो सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था भी लम्बवत् उतार–चढ़ाव की व्यवस्था से पृथक् नहीं रह सकती।

सांस्कृतिक वस्तुओं, सांस्कृतिक तत्व एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन लम्बवत् गतिशीलता की स्थिति में उत्पन्न होता है। परिवर्तन की दिशा उच्च प्रस्थिति से निम्न प्रस्थिति की तरफ अथवा निम्न प्रस्थिति से उच्च प्रस्थिति की तरफ हो सकती है। व्यापक सामाजिक संकट काल में मूल्यों, तत्वों एवं संस्कृति वस्तुओं में उत्पन्न हुई लम्बवत् गतिशीलता एक गंभीर संकट का दिग्दर्शन कराती है। विकास के आकस्मिक परंतु व्यापक परिणाम भी लम्बवत् सामाजिक गतिशीलता को उत्पन्न करते हैं।

* शोध छात्रा, टी.डी.पी.जी.कॉलेज, जौनपुर

लम्बवत् सामाजिक गतिशीलता सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव डालती है। स्तरीकरण का अभिप्राय विभिन्न स्तरों अथवा प्रस्थिति समूहों के मध्य पाई जाने वाली संस्तरणात्मक प्रणाली से है। लम्बवत् गतिशीलता इस प्रणाली में अनेक परिवर्तन कर बिखराव की स्थिति भी उत्पन्न कर देती है। शिक्षा एवं प्रशिक्षण द्वारा कुछ व्यक्ति सीमित संख्या वाली महत्वपूर्ण प्रस्थितियों को अर्जित करने की क्षमता उत्पन्न कर लेते हैं जबकि अन्य व्यक्ति शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण सामान्य जन का अंग बन जाते हैं। इस प्रकार किसी समाज में लम्बवत् प्रणाली अस्तित्व में आ जाती है। **सारोकिन**[1] एवं **लिपसेट**[2] के अनुसार आधुनिक समाज में व्यक्ति को उसकी योग्यता क्षमता के आधार पर पुरस्कार देने की प्रवृत्ति है जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक समाजों में सामाजिक परिवर्तन की गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है।

परम्परागत काल में यद्यपि भारतीय समाज सापेक्षिक दृष्टि से स्थिर था परंतु जाति गतिशीलता संभव थी। यह गतिशीलता उच्चस्तरीय एवं निम्नस्तरीय दोनों ही रूपों में संभव थी। जाति व्यवस्था में गतिशीलता के चार कारक थे –

1. राजनीतिक व्यवस्था में लचीलापन, जिसमें शक्तिशाली जातियाँ एवं समूह राजनीतिक नियंत्रण में सफलतायें प्राप्त कर उच्चस्तरीय गतिशीलता के अवसरों को प्राप्त करने में सफल हुई। इसके अतिरिक्त राजा के पास यह शक्ति थी कि वह पुरस्कार के रूप में जाति के क्रम को उच्च कर दे एवं दण्ड के रूप में जाति के क्रम को निम्न कर दे।
2. तमाम प्राकृतिक व सामाजिक कारणों ने स्थानिक गतिशीलता व स्थानिक गतिशीलता ने सामाजिक गतिशीलता की वृद्धि में योगदान किया। प्रत्येक गांव में स्थानीय संस्तरण विद्यमान था तथा जो व्यक्ति नवीन क्षेत्रों में जाकर बसता था उसकी प्रस्थिति भी नवीन स्थानीय संस्तरण के संदर्भ में परिवर्तित हो जाती थी। यद्यपि गतिशीलता की इकाईयाँ व्यक्तियों के परिवार थे।
3. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के द्वारा भी एक समूह, परंपरा से स्थानीय समुदाय द्वारा जो स्थान उसे प्राप्त है, उससे उच्च प्रस्थिति का दावा करने लगती है।
4. कुलीन विवाह : परंपरागत भारत में कुलीन विवाह जाति गतिशीलता का एक अन्य माध्यम था। कुलीन विवाह एक ऐसा प्रचलन है जो देश के कुछ भागों में स्वीकार्य था। इसके अनुसार उच्च जाति का पुरूष निम्न जाति की स्त्री से विवाह कर सकता था। परिणामस्वरूप स्त्री अपने पति की जाति की सदस्य हो जाती थी।

एस.सी. दूबे[3]**, एम.एस.ए.राव**[4] एवं **एम.एस. गोरे**[5] के अनुसार औपचारिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण सामाजिक संरचना में व्यक्तियों की प्रस्थिति के निर्धारण के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। उच्च शिक्षा व्यक्ति को उच्च प्रतिष्ठा से सम्बद्ध व्यवसाय को अर्जित करने में सहायता प्रदान करती है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को उच्च सामाजिक पद प्राप्त होता है। अतः शिक्षा सामाजिक लाभ पहुँचाने वाले अनेक कारकों में से एक महत्वपूर्ण कारक है। वस्तुतः सामाजिक लाभ शिक्षा से निर्धारित भी होता है। **विक्टर डिसूजा**[6] शिक्षा की गुणात्मकता एवं परिणात्मकता के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा के ये गुणात्मक एवं परिमाणात्मक पक्ष यौनिक प्रस्थिति एवं व्यवसाय प्रस्थितियों में पाये जाने वाले भेद से प्रभावित होते हैं। डिसूजा के अनुसार शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध व्यवसाय एवं आय से है जो किसी व्यक्ति की प्रस्थिति को उच्च बनाने की प्रक्रिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक शिक्षा, समाज विज्ञानों की शिक्षा की तुलना में उच्च प्रस्थिति प्रदान करने में सहायक है। व्यावसायिक शिक्षा एवं

विज्ञान की शिक्षा का अन्तर रोजगार एवं आय में भी अभिव्यक्त होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा स्थानिक एवं व्यावसायिक प्रवसन को भी उत्पन्न करती है।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी सामाजिक वर्ग से सम्बद्ध पद को स्थिरता–निरन्तरता प्रदान की जा सकती है। शिक्षा सम्बन्धी उपलब्धियों एवं व्यावसायिक उपलब्धियों के मध्य सदैव यह सम्बन्ध देखे जा सकते हैं। भारतीय स्थिति में जाति आधारित असमानता विभिन्न वर्गों पर भी अपना प्रभाव डालती है। अभी कुछ वर्षों पूर्व तक ब्राह्मण जाति का शिक्षा के अवसरों पर लगभग एकाधिकार था। यद्यपि वर्तमान शताब्दी में ब्राह्मणों का यह एकाधिकार काफी कम हुआ है। अब समस्या यह है कि किसी भी जाति के सदस्य को पब्लिक स्कूल में प्रवेश लेने से रोका नहीं जा सकता परन्तु वित्तीय समस्याओं–बाधाओं एवं विद्यालयों के उपलब्ध न होने के कारण वे स्कूल में प्रवेश से वंचित हो जाते हैं। **एस.सी.दूबे**[7] के अनुसार यह परिवर्तन मुख्य रूप से औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आये हैं। अतः आधुनिक समय में शिक्षा ने व्यावसायिक गतिशीलता की दर में आशातीत वृद्धि की है। शिक्षा को सबसे उच्च प्राथमिकता दी गयी है क्योंकि यह आधुनिक समाज की अत्यन्त महत्वपूर्ण विशेषता है तथा उच्चस्तरीय गतिशीलता में अर्थात् विकास के अवसरों की प्राप्ति में सहायक है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक उपलब्धियों एवं अवसरों के साथ शिक्षा का उच्च सह सम्बन्ध है।

व्यवसाय जीविकोपार्जन अथवा जीवन–यापन को निर्धारित करता है परन्तु विक्टर डिसूजा के अनुसार व्यवसाय सामाजिक प्रस्थिति को भी निर्धारित करता है। चण्डीगढ़ जहाँ पर कि **विक्टर डिसूजा**[8] ने अध्ययन किया, 31.3 प्रतिशत श्रम शक्ति–कार्य निदर्श का भाग थी। स्वास्थ्य, शिक्षा, लोक प्रशासन, व्यापार एवं वाणिज्य वे कारक हैं जो प्रमुख रूप से औद्योगिक विभाजन को प्रस्तुत करने में भूमिका निभाते हैं। ये सभी व्यवसायों के लगभग 70 प्रतिशत को निर्मित करते हैं। डिसूजा के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि कार्यरत व्यक्तियों का एक बहुत बड़ा बहुमत उन क्षेत्रों में कार्य करता था जो कि उनके आवासीय क्षेत्रों से दूर अथवा अलग थे।

शिक्षा व्यावसायिक गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। पश्चिम में शिक्षा व्यक्ति की गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण साधन थी। आज भारत के संदर्भ में भी यह तर्क दे सकते हैं। 1947 में स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त पिछड़े एवं निर्बल वर्गों को अच्छी सुविधायें प्रदान कराना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक प्राथमिकता बन गया। सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में इन पिछड़े वर्गों को अनेक उदार सुविधायें प्रदान की हैं। इन सुविधाओं को प्रदान करने की पृष्ठभूमि में यह तर्क है कि पिछड़े वर्गों के साथ हुए सामाजिक व आर्थिक शोषण को समाप्त किया जा सकेगा। शिक्षा से सम्बद्ध ये विशेष सुविधायें सामाजिक–आर्थिक असमानता को समाप्त करेगी।

विद्यालय से महाविद्यालय व विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा गतिशीलता को उत्पन्न करने की महत्वपूर्ण कारक कही जाती है। एक विशेष स्तर की शिक्षा अथवा विशिष्ट प्रकृति की शिक्षा कुछ व्यवसायों को अपनाने हेतु अनिवार्य होती है। तभी उस व्यवसाय को उपयुक्त रूप से किया जा सकता है। अतः शिक्षा एवं व्यवसाय के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध है। ये सम्बन्ध गतिशीलता को निर्धारित करते हैं क्योंकि विशेष प्रकार की शिक्षा विशेष प्रकार के व्यवसाय में प्रवेश दिलाती है। शिक्षा एवं व्यवसाय का सम्बन्ध उच्चस्तरीय एवं निम्नस्तरीय सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित करता है। अतः शिक्षा व्यवसाय एवं गतिशीलता एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

सन्दर्भ :

1. Sorokin, P.A., Social and Cultural Mobility, The free press Glencoe, Illinois, 1927.
2. Lipset, S.M. & Bendix, R., Social Mobility in Industrial Society, Berkeley, Los-Angeles, 1959.
3. Dubey, S.M., Social Mobility among the Professions : study of professions in a trasitional Indian city (Gorakhpur, U.P.), popular prakashan, Bombay, 1975, pp. 7-65, 76-77.
4. Rao, M.S.A., Social Change in Mabar, Bombay, Papular Book depot, 1957.
5. Gore, M.S., Desai, I.P., 'The Scope of a Sociology of Education', in papers The sociology of education in India (ed.) Gore & Desai, National Council of educational research and training, 1967, pp. 4-5.
6. Disuza, Victor, S., Social Structure of a Planned City Chandigarh, New Delhi : Orient Longman, 1968.
7. Dubey, S.C., Modernization and its Adoptive Demends on Indian Society, Pub. in papers The Sociology of education (ed.) Gore & Desai, National Council of educational research and training, 1967.
8. D'Souza, V.S., 'Caste and Class : A Reinterpretation', Journal of Asian and African Studies, Vol. 2, Nos, 3-4, 1967.